साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

वे आते ही चले गये

मुकेश चन्द
कुपा किन्नौर, हि प्र, भारत

शांत मन के सराबोर
वे आते ओर चले गये
चिडियों की चहचह
पतियों की सरसराहट

बारिश की फुआरों
हवा के सरस
सराबोर करते मन

रंगो के मौसम
करवट बदलते
पहाडों की हरियाली
संग समेट लेती है

पगडंडियों से चलते
थकान को किनारे
छोड जाते हैं पसीने

फूलों फलों के रंग
समेट लेती मौसम
स्फूर्ति से मन
सराबोर होने लगता है ।